



युवा जीवन

नवंबर 2025

अपने लहू से छुड़ाए गए बच्चों को अपने पास इकट्ठा करने के लिए,

मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ!

प्रस्तावना

मेरे प्रिय युवा मिलो,

यीशु के अनमोल नाम में आपको हार्दिक अभिनन्दन!

आप जैसे युवाओं को यीशु के लिए पूरे जोश से जीते देखकर मेरा हृदय अत्यंत प्रसन्न होता है। ऐसी दुनिया में जहाँ अनगिनत युवा सांसारिक सुखों और इच्छाओं के पीछे भाग रहे हैं, आपने मसीह के लिए एक पवित्र और उत्साही जीवन जीने का चुनाव किया है—और यही आपको सचमुच धन्य बनाता है।

कभी-कभी, आपके मन में यह विचार आ सकता है: "मैं पूरे मन से परमेश्वर के लिए जी रहा हूँ, पाप के विरुद्ध दृढ़ हूँ और एक अलगाव का जीवन जी रहा हूँ—फिर भी मुझे उपहास, समस्याओं और शर्म का सामना करना पड़ता है। लेकिन जो लोग केवल मसीही नाम धारण करते हैं, वे सुखी जीवन जीते प्रतीत होते हैं।" निराश न हों! बाइबल कहती है, "प्रत्येक का कार्य आग से प्रगट होगा" (1 कुरिन्थियों 3:13)। आग प्रत्येक व्यक्ति के कार्य की गुणवत्ता की परीक्षा लेगी—और इसी तरह उसका असली मूल्य सामने आएगा।

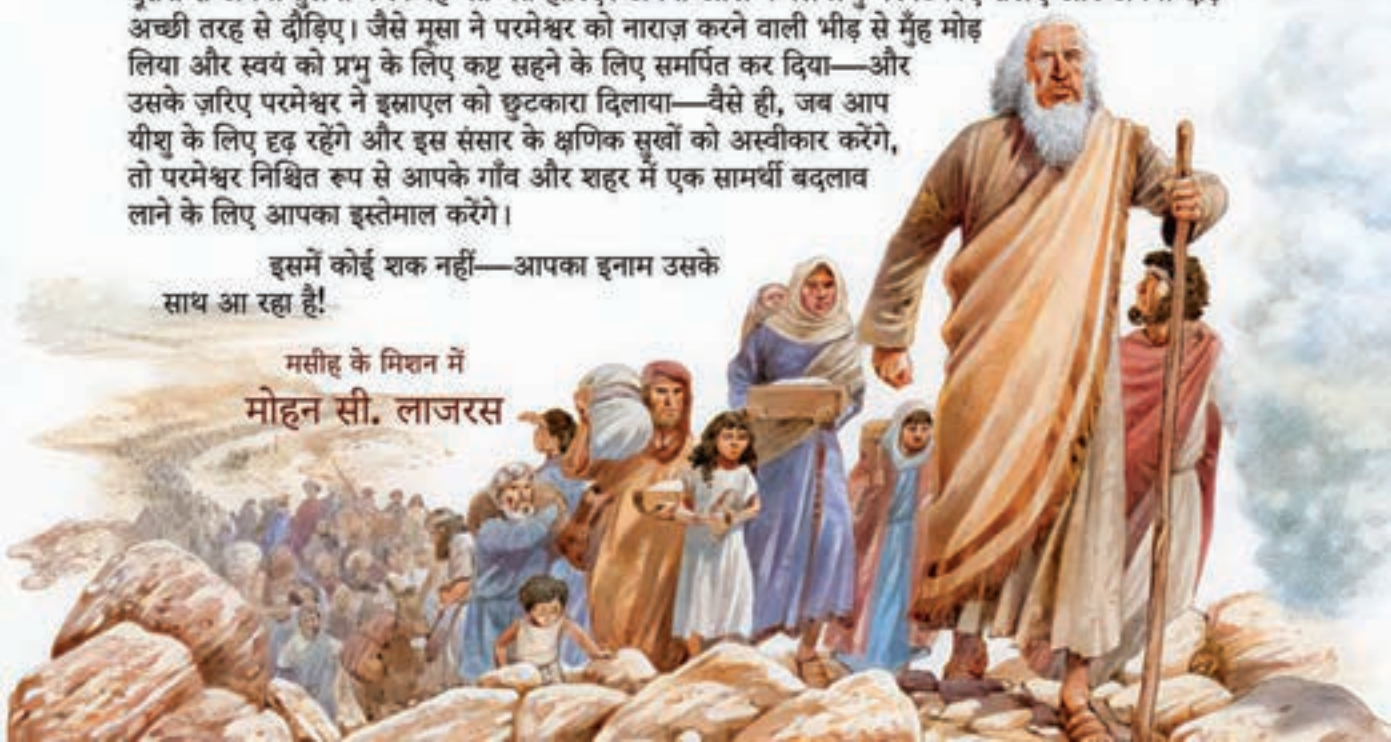
जब दुनिया कहती है, "जैसा चाहो वैसा जियो," तो परमेश्वर की संतानों को अलग चुनाव करना होगा। यदि हम परमेश्वर के अंतिम दिनों के चलन में भाग चाहते हैं, तो हमें एक अलगाव का जीवन जीना होगा—दुनिया के तौर-तरीकों के अनुरूप नहीं।

मूसा तीन महीने की उम्र से चालीस साल की उम्र तक राजमहल में रहा। लेकिन एक बार जब उसे एहसास हुआ कि वह वास्तव में कौन है, किसने उसे जन्म से ही सुरक्षित रखा था, और उसका परमेश्वर और लोग कौन हैं, तो उसने पाप के क्षणिक सुखों का आनंद लेने के बजाय परमेश्वर के लोगों के साथ दुःख सहना चुना (इब्रानियों 11:25)। मूसा के जुनून को देखकर, परमेश्वर ने उसे पूरे इस्राएल का अगुवा नियुक्त किया और उसके ज़रिए बड़े-बड़े चमत्कार किए।

मूसा के बाद, परमेश्वर ने यहोशू को—उसकी आज्ञाकारिता और जोश को देखकर—अगली पीढ़ी का नेतृत्व करने के लिए खड़ा किया। उसी तरह, जब आप परमेश्वर के लिए जोशीले बने रहेंगे, तो वह आपको भी ऊँचा उठाएगा। दूसरों से अपनी तुलना करके हिम्मत मत हारिए। अपनी आंखें केवल प्रभु पर टिकाए रखिए और अपनी दौड़ अच्छी तरह से दौड़िए। जैसे मूसा ने परमेश्वर को नाराज़ करने वाली भीड़ से मुँह मोड़ लिया और स्वयं को प्रभु के लिए कष्ट सहने के लिए समर्पित कर दिया—और उसके ज़रिए परमेश्वर ने इस्राएल को छुटकारा दिलाया—वैसे ही, जब आप यीशु के लिए दृढ़ रहेंगे और इस संसार के क्षणिक सुखों को अस्वीकार करेंगे, तो परमेश्वर निश्चित रूप से आपके गाँव और शहर में एक सामर्थी बदलाव लाने के लिए आपका इस्तेमाल करेंगे।

इसमें कोई शक नहीं—आपका इनाम उसके साथ आ रहा है!

मसीह के मिशन में
मोहन सी. लाजरस



कोई ट्रेंड नहीं है

मेरे दोस्त

हेलो मित्रों! आप सब कैसे हैं? इस कॉलम में हर महीने, हम उन ट्रेंडी चीजों के बारे में बात करते हैं जो अक्सर आज के युवाओं का ध्यान भटकाती और गुमराह करती हैं। इस बार, आइए एक और ट्रेंड के बारे में बात करते हैं जो हमें चुपचाप सही रास्ते से भटका देता है।

युवा होने के नाते, दूसरों को प्रभावित करने के लिए हम जो कुछ भी करते हैं, वह अनजाने में हमें मुसीबत में डाल सकता है। आज के युवाओं में सबसे मज़बूत ट्रेंड में से एक है, उत्सवों, पार्टियों और मित्रों के साथ घूमने की लगातार लालसा। ये गतिविधियाँ मज़ेदार और रोमांचक लग सकती हैं, लेकिन ये अक्सर हमारे पैसे को बर्बाद कर देती हैं, हमारे शरीर को कमज़ोर कर देती हैं, और हमारी आध्यात्मिक सामर्थ्य को भी कमज़ोर कर देती हैं। जब ये चीज़ें स्वस्थ सीमा पार कर जाती हैं, तो ये एक युवा व्यक्ति के भविष्य को पूरी तरह से बर्बाद कर सकती हैं।

बाइबल और उत्सव मनाना

बाइबल उत्सवों के बारे में भी बात करती है। अय्यूब के बच्चे नियमित रूप से अपने जन्मदिन बड़े-बड़े भोजों के साथ मनाते थे। लेकिन हर उत्सव के बाद, अय्यूब परमेश्वर को बलिदान चढ़ाते हुए कहता था, "कदाचित् मेरे बच्चों ने पाप किया हो और अपने मन में परमेश्वर को कोसा हो।" (अय्यूब 1:5)। उसके उत्सव एक सुरक्षा घेरे में थे—उनकी सीमाएँ थीं।

इसके विपरीत, याकूब की बेटी दीना, शेकेम की खोजबीन के लिए निकली तो सुरक्षा की सीमा लांघ गई। उस एक लापरवाही भरे कदम की उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी—उसने अपनी पवित्रता और गरिमा खो दी।

सीमाएँ आशीष लाती हैं

पवित्-शास्त्र कहता है, "यदि कोई अध्यक्ष बनना चाहता है, तो वह एक नेक काम चाहता है।" (1 तीमुथियुस 3:1)। लेकिन ज़्यादातर युवाओं को निगरानी या जवाबदेही पसंद नहीं होती। सच कहूँ तो, हमें यह पसंद नहीं कि हमें बताया जाए कि क्या करना है!

फिर भी, 1 पतरस 5:5-6 में, प्रेरित पतरस युवाओं को विशेष रूप से आज्ञाकारी और नम्र होने का निर्देश देता है। मिस्र का युवक यूसुफ, हर दिन यह जानते हुए जीता था कि परमेश्वर उसे देख रहा है—और इस जागरूकता ने उसे प्रलोभनों का विरोध करने और विजय प्राप्त करने में मदद की।

परमेश्वर की सीमाओं के भीतर मनाए जाने वाले उत्सव आनंद और आशीष लाते हैं। जब हम जवाबदेह और अनुशासित रहते हैं, तो हम उन जालों से बचते हैं जो कई जिंदगीयों को बर्बाद कर देते हैं।

चलन(ट्रेंड) का अनुसरण करने से पहले सोचें

बुद्धिमान राजा सुलैमान ने लिखा:

"हे जवान, जवानी में आनन्दित रह, और अपनी जवानी के दिनों में अपने मन को आनन्दित रख। अपने मन के मार्गों पर और अपनी आँखों से जो कुछ देखेगा, उस पर चल, परन्तु जान रख कि इन सब बातों के कारण परमेश्वर तुझे दण्ड देगा।" (सभोपदेशक 11:9) [आज की पीढ़ी अक्सर मानती है कि असली खुशी पार्टियों, तेज़ संगीत और सप्ताहांत की मस्ती में मिलती है। ये इसे ट्रेंड(चलन) कहते हैं। लेकिन ज़रा सोचिए—क्या यह रास्ता आपको सचमुच शांति देता है? क्या यह स्थायी आनंद देता है? क्षणिक उत्साह और क्षणिक सुखों के पीछे भागकर अपना भविष्य और अपना अनंत जीवन न गँवाएँ!

अपने ट्रेंड को नया रूप दें !

झूठी चमक-दमक से दूर रहें जो आपके जीवन को बर्बाद कर देती है।

भलाई को अपना नया ट्रेंड बनाएँ—ऐसी चीज़ें जो अनंत आनंद और स्थायी शांति लाती हैं।

अपनी जीवनशैली में यीशु मसीह को प्रतिबिंबित करें, जिसने संसार को जीत लिया।

क्योंकि केवल एक ही सच्चा ट्रेंड-निर्माता है जिसने संसार को जीत लिया—और वह यीशु है। (यहून्ना 16:33)



चमत्कार होते हैं कड़वाहट बदलकर मीठा हो जाता है!

एक बार, एक बहन मुझसे प्रार्थना के लिए मिलने आई। जब मैंने उससे पूछा कि वह मुझसे किस लिए प्रार्थना करवाना चाहती है, तो उसने रोते हुए कहा, "कृपया प्रार्थना करें कि प्रभु मुझे ले जाएँ।" मैं चौंक गया। "आप ऐसा क्यों कह रही हैं?" मैंने पूछा। उसने दर्द से कहा, "मैं अब अपनी समस्याओं को और नहीं झेल सकती। ज़िंदगी असहनीय लगती है। मैं बस मर जाना चाहती हूँ।"

उसका हृदय बहुत ज़ख्मी था, और ज़िंदगी उसके लिए कड़वी हो गई थी। मैंने उसे दिलासा देते हुए कहा, "जिस प्रभु ने हमें बनाया है, वह हमें ले जाने वाला नहीं है—वही तो ज़िंदगी की कड़वाहट को मिठास में बदल देता है।" उसके लिए प्रार्थना करने के बाद, मैंने उसे हृदय में शांति के साथ घर भेज दिया।

हो सकता है आज आप भी ऐसा ही महसूस कर रहे हों। हो सकता है आप सोच रहे हों, "ज़िंदगी बहुत कड़वी हो गई है। मौत जीने से आसान लगती है।" हो सकता है आप पूछ रहे हों, "यह सिर्फ मेरे साथ ही क्यों हो रहा है? मैं जीना ही क्यों चाहूँ?" निराश मत होइए! एक चमत्कार आपके पास आने वाला है। आपकी कड़वाहट बदलकर मीठा हो जाएगा। आपके जीवन के कड़वे अध्याय जल्द ही खुशियों और मिठास से भर जाएंगे। आप सोच रहे होंगे, "ऐसा कैसे हो सकता है? मैंने इतने लंबे समय तक इंतज़ार किया है—अब क्या बदलने वाला है?" परमेश्वर का वायदा याद रखें: "मैं तुम्हें अद्भुत चीज़ें दिखाऊँगा" (मीका 7:15)

आपकी समस्या चाहे जो भी हो—चाहे वह दर्द हो, डर हो, बाधाएँ हों या ज़रूरतें हों—वह आपकी कहानी बदलने के लिए चमत्कार कर सकते हैं। जिस परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकालते समय उनके लिए चमत्कार किए थे, वही परमेश्वर आपके लिए भी वही चमत्कार करेंगे!

जब कड़वाहट आती है

बाइबल कहती है: "वे तीन दिन तक रेगिस्तान में बिना पानी के चलते रहे। जब वे 'मारा' पहुँचे, तो उन्हें पानी तो मिला, लेकिन वह कड़वा था, इसलिए वे उसे पी नहीं सके। इसलिए उस जगह का नाम मारा पड़ा। तब मूसा ने यहोवा को पुकारा, और यहोवा ने उसे लकड़ी का एक टुकड़ा दिखाया।

मूसा ने उसे पानी में डाला, और पानी मीठा हो गया" (निर्गमन 15:22-25)

कल्पना कीजिए—तीस लाख से ज़्यादा लोग तीन दिन तक बिना पानी के रेगिस्तान में चलते रहे! बच्चे रो रहे थे, "माँ, मुझे प्यास लगी है!" माता-पिता बेबस और दुखी महसूस कर रहे थे। फिर अचानक, उन्हें एक झरना मिल गया! उनके हृदयों में खुशी भर गई। आखिरकार—पानी! लेकिन जब वे उसे पीते हैं, तो वह कड़वा होता है। पीने लायक नहीं। निराशा उनकी उम्मीद को चकनाचूर कर देती है। उन्हें ताज़गी की उम्मीद थी, लेकिन बदले





में उन्हें कड़वाहट मिली। कभी-कभी जिंदगी ऐसी ही होती है, है ना? हम अच्छी चीज़ों की उम्मीद करते हैं—और बदले में निराशा ही मिलती है। हम योजनाएँ बनाते हैं, उम्मीदें रखते हैं, सपने देखते हैं... लेकिन जब चीज़ें हमारी उम्मीद के मुताबिक नहीं होतीं, तो जिंदगी कड़वा लगने लगती है। निराशाएँ हमारी खुशियों में ज़हर घोल सकती हैं। कुछ लोग तो पूरी तरह हार मान लेते हैं—यह सोचकर कि मौत एक रास्ता है। लेकिन आत्महत्या कभी कोई समाधान नहीं है। यह तो बस अनंत पीड़ा की ओर ले जाती है। इसीलिए दुश्मन झूठ फुसफुसाता है जो लोगों को विनाश की ओर धकेलता है।

लेकिन इस सच्चाई को सुनिए: एक ईश्वर है जो आपकी कड़वाहट को मिठास में बदल सकता है! जैसे उसने कड़वे पानी को मीठा बना दिया, वैसे ही वह आज आपके दर्द को शांति में बदल सकता है।

एक सच्ची कहानी

एक युवा कॉलेज छात्र को घर और पढ़ाई, दोनों जगह असहनीय संघर्षों का सामना करना पड़ा। उसका हृदय टूट गया, और जीवन का सारा अर्थ ही खत्म हो गया। उसने अपने कमरे की हर नोटबुक और दीवार पर लिख दिया: “जीना बेकार है। जीना मूर्खता है।”

एक शाम, उसने अपनी जान लेने का फैसला किया। लेकिन तभी, उसके दो सहपाठी उससे मिलने आए। उन्होंने कहा, “हम प्रार्थना करने जा रहे हैं—क्या तुम आना चाहोगे?” उसने सोचा, “मैं तो ईसाई भी नहीं हूँ। मैं क्यों जाऊँ?” लेकिन फिर उसने मन ही मन सोचा, “ठीक है। मैं आखिरी बार देखता हूँ कि वे क्या करते हैं—और फिर मैं इसे खत्म कर दूँगा।” उसने सोचा था कि वह किसी चर्च की इमारत में जाएगा, लेकिन वे उसे पास की एक पहाड़ी पर ले गए। वहाँ न कोई क्रूस था, न कोई मूर्ति—बस खुला आसमान और सन्नाटा था। उसने देखा कि वे एक चट्टान पर घुटने टेककर प्रार्थना करने लगे, परमेश्वर को “पिता” कहकर पुकारने लगे। उसने सोचा, “क्या हम सचमुच परमेश्वर को ‘पिता’ कह सकते हैं? क्या हम उनसे बात कर सकते हैं?” आश्चर्य से जब वह ये देख

रहा था, यीशु मसीह वहाँ उससे मिले। अनजाने में, वह भी घुटनों के बल गिर पड़ा और रोने लगा। अपनी सारी कड़वाहट उँडेलते हुए, उसने यीशु को सब कुछ बताया। और यीशु ने उसे छुआ। उसका हृदय, जो कभी दर्द से भरा था, शांति, आनंद और नई आशा

से भर गया। उसकी कड़वाहट मीठा हो गया! वह युवक बाद में एक सेवक बना और हज़ारों लोगों को परमेश्वर का प्रेम बाँटने लगा। यीशु आपके लिए भी ऐसा ही कर सकते हैं। वह आपकी कड़वाहट को मिठास में बदल सकते हैं—और वह अपने चमत्कारों के माध्यम से ऐसा करेंगे।

आप इस चमत्कार को कैसे हासिल कर सकते हैं?

पेड़ को देखो! जब मारा का पानी कड़वा हो गया, तो मूसा ने परमेश्वर को पुकारा। परमेश्वर ने उसे एक पेड़ दिखाया। मूसा ने उस पेड़ को पानी में फेंक दिया—और पानी मीठा हो गया! उस पेड़ में कड़वाहट को मिठास में बदलने की सामर्थ्य थी। वही “पेड़” आज आपके जीवन के पास खड़ा है। इसे देखिए—और आपकी कड़वाहट बदल जाएगी! वह पेड़ यीशु मसीह के क्रूस का प्रतीक है—वह क्रूस जिस पर उन्होंने आपके लिए अपना लहू बहाया। क्रूस की ओर देखिए, और आपकी कड़वाहट मिठास में बदल जाएगी!

प्रिय युवा मित्र,

जब जीवन कड़वा और कष्टदायक लगे, जब निराशा आपके हृदय पर छा जाए—तो क्रूस की ओर देखिए। यीशु ने उस क्रूस पर कड़वाहट का स्वाद चखा ताकि आपका जीवन मिठास से भर सके। क्या आप सोच रहे हैं, “मैं क्यों जीऊँ? अगर मैं मर जाता तो बेहतर होता?” तो क्रूस की ओर देखिए! वहाँ आपको अपना उत्तर मिल जाएगा। यीशु की ओर देखिए—जो आपके लिए उस पेड़ पर लटके हुए हैं। उनसे बात करें। अपना हृदय खोलें। केवल वही आपके दर्द को सचमुच समझता है — और केवल वही आपके दुःख को आनंद में बदल सकता है।

आपकी कड़वाहट बदलकर मीठा हो जाएगी — क्योंकि यीशु इसे ऐसा बनाते हैं।

मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ!



संसार की नींव रखे जाने से पहले, यीशु मसीह मानवजाति को पाप से मुक्ति दिलाने वाले उद्धारकर्ता के रूप में प्रकट हुए। पिता द्वारा संसार के उद्धारक के रूप में भेजे गए, यीशु ने स्वयं को समस्त मानवजाति के लिए पूर्ण बलिदान के रूप में क्रूस पर अर्पित कर दिया, जिससे उद्धार का कार्य पूरा हुआ। तीसरे दिन, वे पुनः जीवित हुए और — स्वर्ग पर उठा लिए गए और जैसा उन्होंने वायदा किया था, वे एक बार फिर इस पृथ्वी पर धर्मी न्यायाधीश के रूप में लौटेंगे। उनके न्याय से कोई नहीं बच सकता।

पुराने और नए दोनों नियम मसीह के दूसरे आगमन के बारे में स्पष्ट रूप से बताते हैं। यीशु ने स्वयं कहा, “मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूँ। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि तुम भी जहाँ मैं रहूँ वहाँ रहो।” (यूहन्ना 14:3)

परमेश्वर ने यह निश्चित किया है कि प्रत्येक व्यक्ति एक बार मरेगा और फिर न्याय का सामना करेगा। हनोक के दिनों से, कई भविष्यवक्ताओं—और बाद में प्रेरित पौलुस, पतरस

और यूहन्ना—ने साहसपूर्वक घोषणा की कि यीशु संसार का न्याय करने के लिए लौटेंगे।

“जैसे नूह के दिनों में हुआ था, वैसा ही मनुष्य के पुत्र के आगमन पर भी होगा।” (मत्ती 24:37)



नूह के समय में, लोग अपनी मर्जी से खाते-पीते और रहते थे। हालाँकि नूह ने उन्हें आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी दी थी, फिर भी किसी ने ध्यान नहीं दिया—जब तक कि जलप्रलय आकर उन सबको बहा नहीं ले गया। यीशु मसीह का आगमन भी वैसा ही होगा। आज भी, उनके आगमन के

अनगिनत संदेश सुनने के बावजूद, लोग अविचलित हैं। इसलिए, सतर्क रहें, पश्चाताप करें और उनके आगमन के लिए अपने हृदय को तैयार करें।

आज हम अपने आस-पास जो युद्ध और युद्ध की अफवाहें देखते हैं, वे उसके आगमन के स्पष्ट संकेत हैं। पाप, अन्याय और अनैतिकता—ठीक सदोम और अमोरा के दिनों की तरह—पूरी धरती पर तेज़ी से फैल रही है। उस समय, केवल

कुछ ही लोग परमेश्वर के भय और पवित्रता में रहते थे; आज भी यही स्थिति है। चाहे आप कितने भी पापों से घिरे हों, अपनी रक्षा करें और सावधानी से जीवन जिएँ ताकि आप पाप में न फँसें।

“इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम न तो उस दिन को जानते हो, न ही उस घड़ी को जब मनुष्य का पुत्र आएगा।” (मत्ती 25:13)

मसीह के आगमन के दिन, वे लोग जो उसे कभी नहीं जानते थे—और यहाँ तक कि वे भी जो उसे जानते तो थे, परन्तु ऐसे जीते थे मानो उसे जानते ही नहीं—भय और आतंक से काँप उठेंगे। परन्तु जो उसके लहू से छुड़ाए गए हैं, जिन्होंने उसके वचन का पालन किया है और उसके आगमन की प्रतीक्षा की है, वे उस दिन आनन्दित होंगे। वे प्रभु का स्वागत भय से नहीं, बल्कि प्रसन्नता से करेंगे।

आज हम जिस संसार को देखते हैं, वह एक दिन आग में भस्म हो जाएगा। “संसार और उसकी अभिलाषाएँ मिट जाती हैं, परन्तु जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा जीवित रहेगा। हे प्रिय बालकों, यह अन्तिम समय है; और जैसा तुम ने सुना है कि मसीह-विरोधी आ रहा है, वैसे ही अब भी बहुत से मसीह-विरोधी आ चुके हैं। इसी से हम जानते हैं कि यह अन्तिम समय है” (1 यूहन्ना 2:17-20)। इसलिए, समय को पहचानें और पवित्र जीवन जीने के लिए स्वयं को समर्पित करें। यीशु ने अपने आगमन के बारे में जो भी भविष्यवाणी की थी, वह हमारी आँखों के सामने आश्चर्यजनक सटीकता के साथ पूरी हो रही है।

(लूका 21:36) में, यीशु ने कहा: “सदा जागते रहो और प्रार्थना करो कि तुम आने वाली हर घटना से बच सको।” अगर हम प्रार्थना रहित जीवन जीते हैं, तो जब वह आएगा तो हम पीछे छूट जाएँगे। आध्यात्मिक रूप से सतर्क रहें, अपने

आस-पास घट रही घटनाओं पर ध्यान दें, उनकी तुलना वचन से करें और प्रार्थना करें। दुःख की बात है कि बहुत से मसीही दिन में पाँच मिनट भी प्रार्थना नहीं करते! लेकिन जब तुरही बजेगी और प्रभु अपने स्वर्गदूतों के साथ लौटेंगे, तो उनके लोग ऊपर उठा लिए जाएँगे—जबकि जो प्रार्थना में चूक गए वे पीछे छूट जाएँगे।

उस दिन दृढ़ रहने और पाप की गिरफ्त से बचने के लिए, आपको जागते रहना होगा और प्रार्थना करनी होगी। भले ही आपने सेवकाई के लिए लाखों रुपये दिए हों, प्रार्थनापूर्ण जीवन के बिना आप उसके आगमन के योग्य नहीं पाए जा सकते। उसके आगमन के संकेत तेज़ हो रहे हैं—वह पहले से ही द्वार पर है। अब और समय नहीं है बर्बाद करने के लिए। उसके आगमन के लिए स्वयं को तैयार करें।

प्रिय युवा मित्रों,

क्या आप पाप से भरी दुनिया में डूब रहे हैं—अपनी पवित्रता

खो रहे हैं, प्रार्थना करना भूल रहे हैं, परमेश्वर से दूर जा रहे हैं, और अपने अनंत भाग्य को खतरे में डाल रहे हैं?

या फिर आप सतर्क रहना, सच्चे मन से प्रार्थना करना और पवित्र जीवन जीना चुनेंगे, क्योंकि आप उस परमेश्वर की प्रतीक्षा कर रहे हैं जिसने कहा था,

“देख, मैं शीघ्र आने वाला हूँ; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिए प्रतिफल मेरे पास है।”

(प्रकाशितवाक्य 22:12)

जिसने वायदा किया था, “मैं शीघ्र आने वाला हूँ,” वह निश्चित रूप से शीघ्र आएगा।



सनसनीखेज खबर



हेलो मिलों! आप सब कैसे हैं? हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह के पवित्र नाम में आपको हार्दिक अभिनन्दन! इस श्रृंखला — "सनसनीखेज खबर" के माध्यम से आपसे फिर से मिलकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

बाइबल में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, "उठ, इस देश की लंबाई और चौड़ाई में चल, क्योंकि मैं इसे तुझे दूंगा।" (उत्पत्ति 13:17)। उसने यहोशू से कहा, "जिस जिस स्थान पर तेरे पाँव का तलवा पड़ेगा, वह सब मैं तुझे दे दूंगा।" (यहोशू 1:3)। और हम देखते हैं कि यीशु स्वयं भलाई करते हुए, जहाँ भी गए, चमत्कार और अद्भुत काम करते हुए घूमते रहे। परमेश्वर ने इन लोगों को देश में चलने के लिए कहा — और परिणामस्वरूप, राष्ट्र, शहर और लोग उनके हाथों में सौंप दिए गए। ये घटनाएँ उस आधार बनीं जिसे हम अब प्रार्थना यात्रा कहते हैं।

इससे मेरे मन में यह सवाल उठा: क्या आज भी प्रार्थना यात्राओं के माध्यम से चमत्कार हो सकते हैं? क्या शहरों और लोगों को अभी भी आज्ञाद किया जा सकता है? इस बारे में सोचते हुए, तमिलनाडु के कुछ इलाकों से हमें कुछ वाकई सनसनीखेज खबरें मिलीं—जो इस बात की ज़बरदस्त गवाही थीं कि परमेश्वर आज भी अद्भुत कर रहा है!

एक बोझ जिससे सफलता प्राप्त हुई

एक बहन थी जो हर रविवार को चर्च जाते समय एक ज्योतिष-विद्या मंदिर के पास से गुज़रती थी। हर बार जब वह उसे देखती, तो उसका मन आध्यात्मिक बोझ से भारी हो जाता। वह हर बार वहाँ से गुज़रते हुए उस जगह के लिए हृदय से प्रार्थना करने लगी। जैसे-जैसे वह प्रार्थना करती रही, उसने कुछ बदलाव महसूस किया—मंदिर में नहीं, बल्कि अपने हृदय में।

अजीब बात यह थी कि मंदिर और भी ज़्यादा लोकप्रिय हो गया, और बड़ी भीड़ उमड़ने लगी। बहन चिंतित हो गई और उसने प्रार्थना की, "प्रभु, मैं हर हफ़्ते इस जगह के लिए प्रार्थना करती रही हूँ, फिर भी यह और भी मज़बूत होता जा रहा है!" लेकिन उसने कभी हार नहीं मानी। वह और भी ज़्यादा जोश से प्रार्थना करती रही, यीशु के नाम पर उस जगह पर विजय की घोषणा करती रही।



और फिर—कुछ चमत्कार हुआ! कुछ ही दिनों में, मंदिर गायब हो गया। इमारत को तोड़ दिया गया था, और उस इलाके को दुकानों में बदल दिया गया था। इसके तुरंत बाद, कई नए लोग उसके चर्च में शामिल होने लगे! प्रार्थना में दृढ़ता का क्या ही प्रभावशाली प्रमाण!

जब प्रार्थना यात्रा चंगाई यात्राओं में बदल जाती है

एक अन्य गाँव में, विश्वासियों का एक समूह प्रार्थना यात्रा और सुसमाचार प्रचार के लिए निकला। जब वे सड़कों पर चल रहे थे, तो उन्होंने एक बुजुर्ग व्यक्ति को छड़ी के सहारे धीरे-धीरे आगे बढ़ते देखा। समूह के दो भाई उससे बात करने के लिए रुके। उन्होंने यीशु और उनकी चंगा करने की सामर्थ्य के बारे में बताया, और वहीं सड़क किनारे, उन्होंने उसके लिए प्रार्थना की।

जैसे ही उन्होंने प्रार्थना पूरी की, वह बुजुर्ग व्यक्ति बिना छड़ी के चलने लगा! आश्चर्यचकित और अभिभूत होकर, समूह ने खुशी से परमेश्वर की स्तुति की। जैसे-जैसे वह बुजुर्ग व्यक्ति चलता रहा, वह सभी से कहता रहा, “यीशु ने मुझे चंगा किया! यीशु ने ही मुझे सामर्थ दिया!” उस मुलाकात के कारण, उस गाँव के कई लोगों ने सुसमाचार सुना और अपने जीवन में आशीषों का अनुभव किया। एक साधारण प्रार्थना यात्रा से शुरू हुआ यह परिवर्तन का एक आंदोलन बन गया!

परिवार के घर में आश्चर्यकर्म

एक अन्य गाँव में, कुछ बहनें विशेष रूप से प्रार्थना यात्रा के लिए निकलीं। अपनी यात्रा के दौरान, संयोग से उनकी मुलाकात एक परिवार से हुई। परिवार ने उन्हें बताया कि उनका छोटा बच्चा टॉन्सिलाइटिस से पीड़ित है और डॉक्टरों ने कहा है कि बच्चे को टॉन्सिल की वृद्धि को हटाने के लिए सर्जरी की आवश्यकता होगी।

बहनों ने माता-पिता को दिलासा दिया, यीशु के बारे में बताया और घर लौटने से पहले बच्चे के लिए प्रार्थना की।

अगले ही दिन, बच्चे की माँ ने बहनों को बुलाया, उसकी आवाज़ खुशी से भरी हुई थी। उसने कहा, “हम आज डॉक्टर से मिले - और उन्होंने कहा कि अब सर्जरी की ज़रूरत नहीं है! सूजन पूरी तरह से गायब हो गई है!” परिवार बहुत खुश हुआ और उन्होंने आश्चर्यकर्म के लिए यीशु की स्तुति की।

हर कदम और हर शब्द में सामर्थ

क्या ये कहानियाँ सुनना आश्चर्यजनक नहीं हैं, मिलों? क्या आप देखते हैं कि प्रार्थना यात्रा और सुसमाचार प्रचार कितने सामर्थी हो सकते हैं? जब हम चलते हैं और प्रार्थना करते हैं, तो हमारे कदमों की झलक भी दुश्मन के गढ़ों को ध्वस्त कर सकती है। विश्वास में हम जो शब्द बोलते हैं, वे चमत्कार कर सकते हैं। अंधकार का साम्राज्य काँपता है - और आत्माएँ मसीह के लिए जीती जाती हैं!

हर दिन, हम अलग-अलग जगहों की यात्रा करते हैं। लेकिन अगर हम हर यात्रा को प्रार्थना यात्रा में बदल दें, तो हम अपने आस-पास परिवर्तन देखना शुरू कर देंगे। तो चलिए, हम ऐसा करें - आइए चलें और प्रार्थना करें, सुसमाचार बाँटें, और यीशु के नाम पर अपने देश को आज़ाद करें! (और भी सनसनीखेज खबरें जारी...)



इग्राइटर्स यूथ फ़ेलोशिप एक जगह है जहाँ युवा अपनी आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करते हैं जीवन की गहन सच्चाइयों की खोज करें बाइबल, और प्रार्थना करने में शक्ति पाएँ एक समूह के रूप में देश। आपका स्वागत है इस फ़ेलोशिप में शामिल होने और बढ़ने के लिए मज़बूत। चलो भी! अपने आप को मज़बूत करो, और दुसरो को मज़बूत करने के लिए तैयार हो जाइये!

हर पहले रविवार

Mumbai – Dharavi

Timing: 5.00 PM- 7.30 PM
World Revival Prayer Centre
2nd Floor, Above Balakrishna
Farsan Mart, Opp. Apna Restaurant,
Near Kamarajar School,
90 Feet Road,
9004882470

हर दूसरे रविवार

THANE

Timing: 5PM - 7:30PM
R.P. Mangala High School
(Near Railway Station),
Room No. 10,
Opp. Bank of Maharashtra,
Thane (East)
9004882470

हर चौथे रविवार

Mumbai-Malad

Timing: 4.00 PM – 6.00 PM
Bethel Ground Floor
305/E, Mith Chauky,
Marve Road,
Malad (W)
9664050567 | 9619996976



पुनर्जागृति के बीज

अलेक्जेंडर डफ

जिन लोगों ने बहुत पहले पुनर्जागृति के बीज बोए थे, उन्होंने आत्माओं की खातिर अपना जीवन समर्पित कर दिया—बिना किसी सात्वना, प्रसिद्धि या पुरस्कार की आशा के। आज ज़्यादातर युवा शायद उनके नाम भी नहीं जानते। इसीलिए, पिछले नौ महीनों से, "पुनर्जागृति के बीज" विषय के अंतर्गत, हम उन पुरुषों और महिलाओं के बारे में जान रहे हैं जिन्होंने अपना जीवन मसीह को समर्पित कर दिया।

पिछले महीने, हमने रॉबर्ट मॉरिसन के जीवन का अध्ययन किया, जो एक ऐसे मिशनरी थे जिन्होंने साहसपूर्वक परमेश्वर से दुनिया के सबसे कठिन क्षेत्र के लिए प्रार्थना की। उन्होंने चीन में 25 वर्षों तक सेवा की—एक ऐसा देश जो सुसमाचार के खुले प्रचार का सख्त विरोध करता था। वहाँ, वे बाइबल का चीनी भाषा में अनुवाद करने वाले पहले व्यक्ति बने, और यीशु मसीह के अविनाशी वचन को चीनी लोगों के हाथों में सौंप दिया। इस महीने, आइए एक और मिशनरी पर नज़र डालें जो 18वीं शताब्दी में एक अलौकिक दर्शन के साथ भारत आए—जिन्होंने उच्च-जाति समुदायों तक पहुँचकर उन्हें सुसमाचार सुनने के लिए प्रेरित किया: अलेक्जेंडर डफ।



अलेक्जेंडर डफ: शिक्षित अभिजात वर्ग
के लिए एक दर्शन

अलेक्जेंडर डफ का जन्म 25 अप्रैल, 1806 को स्कॉटलैंड में हुआ था। उन्होंने सेंट एंड्रयूज विश्वविद्यालय से बाइबिल अध्ययन और विज्ञान, दोनों में उपाधियाँ प्राप्त कीं। 1820 के आसपास, स्कॉटलैंड में पुनरुत्थान और मिशनरी जुनून की लहर जंगल की आग की तरह फैल गई। इस दौरान, डफ ने प्रभु का प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया और मात्र 23 वर्ष की आयु में, उन्होंने अपना जीवन मिशनरी सेवा के लिए समर्पित कर दिया। 1829 में, चर्च ऑफ स्कॉटलैंड ने उन्हें अपना पहला मिशनरी नियुक्त किया। उसी वर्ष, उन्होंने ऐनी डफ से विवाह किया, और दोनों एक नए दर्शन के साथ भारत की यात्रा पर निकल पड़े—कलकता के बौद्धिक और उच्च-जाति समुदायों तक यीशु मसीह का संदेश पहुँचाना।

विनाश से अविचलित

1830 में भारत की अपनी यात्रा के दौरान, इस जोड़े को दो जहाज़ दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ा। उनमें से एक में, डफ ने अपनी सारी किताबें, प्रमाणपत्र और निजी सामान—जो कुछ भी

उनके पास था—खो दिया। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। विश्वास से दृढ़ होकर, उन्होंने बिना रुके भारत की अपनी यात्रा जारी रखी। यहाँ पहुँचते ही, डफ़ ने अपने परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन को साकार करने का बीड़ा उठाया: पश्चिमी शिक्षा और बाइबिल के सत्य का सम्मिश्रण, अंग्रेजी, विज्ञान और धर्मग्रंथों को एक साथ पढ़ाना। इस पद्धति के माध्यम से, उन्होंने भारत के बौद्धिक अभिजात वर्ग की आँखें खोलने का प्रयास किया—अंधविश्वास की बेड़ियाँ तोड़कर उन्हें यह दिखाना कि यीशु मसीह ही सच्चे उद्धारकर्ता हैं।

एक क्रांतिकारी पद्धति

डफ़ के आगमन से पहले, भारत में उच्च-जाति और धनी वर्ग सुसमाचार में बहुत कम रुचि दिखाते थे। जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों के गरीब और निम्न-जाति के लोग खुले और उत्तरदायी थे, वहीं शिक्षित अभिजात वर्ग दूर और संशयी बना रहा। डफ़ का दृढ़ विश्वास था कि मसीही धर्म भारत में तभी गहरी जड़ें जमा सकता है जब वह इन प्रभावशाली समूहों के दिलों और दिमागों तक पहुँचे।

हालाँकि उनके समय के कई मिशनरियों और शिक्षाविदों ने उनके स्वप्न की आलोचना की, डफ़ अडिग रहे। भारत आने के कुछ ही महीनों के भीतर, उन्होंने एक बरगद के पेड़ के नीचे एक छोटा सा अंग्रेजी स्कूल खोला—शुरुआत केवल पाँच छात्रों से। एक सप्ताह के भीतर, छात्रों की संख्या बढ़कर 300 हो गई! उच्च जाति के बंगाली परिवारों के कई युवकों ने सीखने के लिए ज़बरदस्त उत्साह दिखाया।

हालाँकि पाठ्यक्रम में पश्चिमी कला, विज्ञान और अंग्रेजी शामिल थे, फिर भी मसीही शिक्षा पूरे कार्यक्रम का आधार और केंद्र थी। हर दिन की शुरुआत प्रार्थना, बाइबल पढ़ने और धर्मग्रंथों की व्याख्या से होती थी। बाइबल को स्कूल के पाठ्यक्रम में एक मुख्य विषय के रूप में शामिल किया गया था। केवल तीन वर्षों के भीतर, चार छात्रों ने खुले तौर पर यीशु मसीह को स्वीकार किया और बपतिस्मा लिया।

एक स्कूल से एक आंदोलन तक

इन धर्मांतरणों से भयभीत कुछ छात्रों ने स्कूल छोड़ दिया—लेकिन कई अन्य सत्य की खोज में आए। परमेश्वर स्वयं डफ़ के

संस्थान में उत्सुक शिक्षार्थियों को लाए। दसवें वर्ष तक, स्कूल में 800 से ज़्यादा छात्र थे।

ऐसे समय में जब लोग पूछते थे, “महिलाएँ क्यों पढ़ें?” डफ़ ने साहसपूर्वक उच्च जाति की महिलाओं के लिए एक अलग स्कूल खोला। इस अग्रणी कदम ने कई धनी युवतियों को शिक्षा और धर्म की ओर आकर्षित किया। वर्षों से, हज़ारों छात्र उनके स्कूलों से गुज़रे। उनके सेवकाई के अधीन आने वाले शिक्षित और प्रभावशाली लोगों में से, 33 उच्च जाति के व्यक्तियों ने सार्वजनिक रूप से यीशु मसीह को स्वीकार किया और उनका अनुसरण किया। संख्या में कम होने के बावजूद, इस समूह का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। कई लोग मिशनरी, पादरी और चर्च के मज़बूत स्तंभ बन गए। यह अलेक्जेंडर डफ़ के धर्मप्रचार का स्थायी फल था।



एक विरासत जिसने एक आंदोलन को जन्म दिया

डफ़ अपनी सदी के सबसे सफल और वाक्पटु मिशनरियों में से एक बने—एक सच्चे मिशनरी वक्ता।

उन्होंने इंग्लैंड, आयरलैंड, स्कॉटलैंड, वेल्स और अमेरिका में व्यापक यात्राएँ कीं और मिशन क्षेत्र के लिए प्रार्थना और वित्तीय सहायता जुटाने के लिए पूरे जोश से काम किया। शिक्षा को सुसमाचार प्रचार के साथ जोड़ने का उनका अग्रणी दृष्टिकोण एक ऐसा आदर्श बन गया जो पूरी दुनिया में फैल गया। उनके कार्य से प्रेरित होकर, 100 से ज़्यादा युवाओं ने मिशनरी के रूप में विदेशों में सेवा करने के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया।

हमारी पीढ़ी के लिए एक आह्वान

प्रिय युवा मित्रों, अलेक्जेंडर डफ़ ने परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन का पालन किया—धनवानों और शिक्षितों के बीच सुसमाचार बाँटना, और कई लोगों को मसीह की ओर ले जाना। आज, जैसे-जैसे शहरीकरण बढ़ता जा रहा है और शिक्षा आधुनिक लोगों के लिए एक केंद्रीय केंद्र बनती जा रही है, आधुनिक माता-पिता और छात्रों के लिए, हमारी मिशन रणनीति क्या है?

अगर परमेश्वर हमें—अलेक्जेंडर डफ़ की तरह—शिक्षित, शहरी और प्रभावशाली लोगों तक सुसमाचार पहुँचाने के लिए बुलाएँ, तो क्या हम उनके आह्वान का उत्तर देने के लिए तैयार होंगे?

दहेज की दुविधा!!

Heart Beat



मैं 30 साल की हूँ, एक मसीही परिवार में जन्मा और पला-बढ़ा हूँ। मेरे माता-पिता मेरे 26 साल की उम्र से ही मेरे लिए दुल्हन ढूँढ रहे थे। उनका एक व्यवसाय है और हम काफ़ी अमीर हैं, इसलिए वे हमारी हैसियत के मुताबिक किसी की तलाश में थे। लेकिन एक दिन, एक युवा सभा में, मैंने कुछ ऐसा सुना जिसने मेरे हृदय को झकझोर दिया। उपदेशक ने कहा, “एक सच्चे मसीही को कभी दहेज नहीं लेना चाहिए। धन, सुंदरता या विलासिता के लिए प्रार्थना मत करो - एक ऐसी स्त्री के लिए प्रार्थना करो जो यीशु से प्रेम करती हो, प्रार्थना करती हो और जिसने मोक्ष का अनुभव किया हो।” ये शब्द मेरे हृदय में गहराई तक उतर गए। वहीं, मैंने एक फैसला लिया। मैंने अपने माता-पिता से कहा, “मैं दहेज के लिए शादी नहीं करना चाहता। एक ईश्वरीय, प्रार्थनापूर्ण स्त्री जिसका हृदय छुटकारा प्राप्त हो, धन या सुंदरता से कहीं ज़्यादा कीमती होती है। केवल ऐसी स्त्री ही परमेश्वरीय ज्ञान से परिवार चला सकती है और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले तरीके से जीवन जी सकती है।” लेकिन मेरे माता-पिता इससे सहमत नहीं थे। उन्होंने कहा, “अगर हम दहेज नहीं लेंगे, तो लोग सोचेंगे कि हमारे बेटे में कुछ गड़बड़ है। हमारी हैसियत के हिसाब से इसे लेना कोई पाप नहीं है।” उनकी बातों ने मुझे बहुत आहत किया। मुझे दुख होता है कि वे हर दिन पैसे, हैसियत और आराम के बारे में सोचते रहते हैं जबकि मैं कुछ शुद्ध चाहता हूँ। मेरी शादी की योजनाएँ लगातार टलती जा रही हैं, और मुझे सच में समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ।

- रिचर्ड, होसुर।

प्रिय भाई रिचर्ड, मैं आपके दर्द और अपने फैसले पर अडिग रहने के बोझ को सचमुच समझता हूँ। आपके इस सुन्दर दृढ़ विश्वास के लिए मैं परमेश्वर की स्तुति करता हूँ।

जब शादी की बात आती है, तो परमेश्वर जो उम्मीद करता है, वह लोगों की उम्मीदों से बहुत अलग होती है। परमेश्वर की योजना है कि पति-पत्नी मिलकर उसका उद्देश्य पूरा करें—एक मसीह-केंद्रित परिवार बनें जो कई लोगों को आशीष दे। वह चाहता है कि परमेश्वरीय संतान पैदा हो, ऐसे बच्चे जो उसकी इच्छा के अनुसार जीएँ। इसके लिए, दूल्हा और दुल्हन दोनों को बचाए जाने, प्रार्थना करने और यीशु में एक होने की ज़रूरत है, और उसे केंद्र में रखकर एक खुशहाल घर बनाना होगा।



दुख की बात है कि हमारे समाज में, ध्यान भटक गया है। लोग अच्छी नौकरी, ऊँची तनखाह, अमीर परिवार, शारीरिक सुंदरता और कुछ सोने के गहनों के पीछे भागते हैं। इन चीज़ों का अपना महत्व हो सकता है, लेकिन जब ये धार्मिक चरित्र की बजाय मुख्य प्राथमिकता बन जाती हैं, तो शादियाँ टूट जाती हैं—तलाक की अदालतों में, पुलिस थानों में, या दहेज के दुरुपयोग और अहंकार के कारण दुखद मौतें।

हर दिन, समाचार और टीवी चैनल चौंकाने वाली कहानियाँ दिखाते हैं—न केवल गरीब या मध्यमवर्गीय परिवारों में, बल्कि अमीर परिवारों में भी। दहेज प्रथा आज भी कई युवतियों की जान दे रही है। समाज इसे यह कहकर सही ठहराता है, “हमने दहेज नहीं माँगा; उसके माता-पिता ने सम्मान के लिए दिया था। अगर हम मना करेंगे, तो यह अपमानजनक लगेगा।” लेकिन यह एक खतरनाक झूठ है। छुआछूत और जातिगत भेदभाव की तरह, दहेज भी एक और सामाजिक बुराई है जिसका अंत ज़रूरी है—और केवल आपके जैसे साहसी फैसले ही बदलाव की शुरुआत कर सकते हैं।

अगर आप अपने फैसले पर अडिग रहते हैं, तो ये हो सकता है:

► आपके परिवार या रिश्तेदार आपका मज़ाक उड़ा सकते हैं या आपका विरोध कर सकते हैं—लेकिन आपकी ईमानदारी देखकर, वे अंततः समझ जाएँगे और अपना मन बदल लेंगे।

► आपके इस कदम से कई युवा प्रेरित होंगे और वही प्रतिबद्धता दिखाएँगे, जिससे दहेज की इस महामारी का वास्तविक अंत होगा।

► मसीही समुदाय जागृत होगा और इस पापपूर्ण प्रथा से मुक्त होगा।

► अनगिनत युवतियाँ, अमीर और गरीब, जो इस व्यवस्था के तहत पीड़ित हैं, उन्हें अंततः सम्मान और आनंद के साथ जीने का मौका मिलेगा।

► आप जैसे युवाओं के माध्यम से, परमेश्वर ऐसे विवाह स्थापित करेगा जो उसकी इच्छा को प्रतिबिंबित करते हैं—और न केवल पृथ्वी पर लोग आनन्दित होंगे, बल्कि स्वर्ग भी उत्सव मनाएगा!

लेकिन अगर आप समझौता करते हैं और एक बार भी दहेज लेने के लिए सहमत हो जाते हैं...

► आपको यह जानकर अपराधबोध होगा कि आपने परमेश्वर की इच्छा और अपने विश्वास के विरुद्ध कार्य किया है।

► एक परमेश्वरीय जीवनसाथी के बजाय, हो सकता है कि आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए जो संसार, धन और क्षणिक सुख से प्रेम करता हो—जिससे संघर्ष और भ्रम की स्थिति पैदा हो।

► परमेश्वरीय उद्देश्य की अपेक्षा सांसारिक लाभ को प्राथमिकता देने से आपका परिवार परमेश्वर की योजना से भटक सकता है, और अनावश्यक पीड़ा और कठिनाई का सामना कर सकता है।

जैसा कि बाइबल कहती है,
“इस संसार के सहश न बनो,
परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन
भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और
भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से अनुभव करो”
(रोमियों 12:2)।

इसलिए सोच-समझकर कार्य करो—क्या तुम संसार के
प्रवाह के साथ चलोगे, या परमेश्वर के सत्य के लिए
उसके विपरीत तैरोगे?

चुनाव तुम्हारा है!

परमेश्वर तुम्हारे साथ रहे और तुम्हारे जीवन द्वारा महान
कार्य करें!

प्रार्थना मार्गदर्शिका

नवंबर 2025

आइए प्रार्थना करें कि अपहृत, दुर्व्यवहार या हत्या
1 किए गए प्रत्येक बच्चे की रक्षा हो और ऐसे कृत्य पूरी

तरह से बंद हों।

2. प्रार्थना करें कि परमेश्वर का सामर्थी सुरक्षा कवच हमारे देश के प्रत्येक बच्चे पर बना रहे और उन्हें दुष्ट लोगों की पकड़ से सुरक्षित रखे।

3. प्रार्थना करें कि जो लोग मासूम बच्चों का अपहरण और शोषण करते हैं, वे पश्चाताप करें और बंदी बनाए गए प्रत्येक बच्चे को मुक्त किया जाए।

4. आइए हम उन गरीब और सड़क पर रहने वाले बच्चों के लिए भारी मन से प्रार्थना करें जिनका शोषण किया जा रहा है; प्रभु ऐसे बुरे कामों के पीछे छिपे लोगों का व्यक्तिगत रूप से सामना करें।

5. प्रार्थना करें कि नन्हे-मुन्नों का खून मांगने वाली हर दुष्ट-आत्माओं को बाँधकर नष्ट कर दिया जाए।

6. आइए हम प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन लोगों को बेनकाब और अपमानित करें जो बच्चों की तस्करी करते हैं और अपने फायदे के लिए उनके साथ वस्तुओं जैसा व्यवहार करते हैं।

7. आइए हम किशोर सुधार गृहों में बंद बच्चों के लिए प्रार्थना करें कि वे सच्चा पश्चाताप करें, परिवर्तन पाएँ और एक धन्य भविष्य की ओर कदम बढ़ाएँ।

8. आइए प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन बच्चों के भविष्य की ज़िम्मेदारी लें जिन्होंने अपने माता-पिता खो दिए हैं।

9. भारत में हर साल लगभग 4,50,000-5,00,000 सड़क दुर्घटनाएँ होती हैं, जिनमें लगभग 1,50,000 लोगों की जान जाती है। प्रार्थना करें कि यह संख्या तेज़ी से कम हो और हमारा देश दुर्घटना-मुक्त हो।

10. आइए प्रार्थना करें कि भारत, जो सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों के मामले में दुनिया में सबसे आगे है और जिसमें तमिलनाडु देश में सबसे ऊपर है, इन लासदियों को पूरी तरह से मिटा दे और हमारी सड़कें सुरक्षा के रास्तों में बदल जाएँ।

11. आइए परिवहन और राजमार्ग क्षेत्र में भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ फेंकने और केंद्र व राज्य सरकारों से सड़कों की मरम्मत और रखरखाव के लिए कड़ी कार्रवाई करने की प्रार्थना करें।

12. प्रार्थना करें कि सरकार शराब पीकर गाड़ी चलाने वालों पर जुर्माना और उचित दंड का सख्ती से पालन करे।

13. तेज़ गति से गाड़ी चलाने और यातायात नियमों का उल्लंघन करने से होने वाली दुर्घटनाओं के विरुद्ध प्रार्थना करें; हर सड़क पर सुरक्षा और समझदारी बनी रहे।

14. आइए, उन लंबी दूरी के ड्राइवर्स की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें जो पर्याप्त आराम या नींद के बिना वाहन चलाते हैं; थकान से होने वाली दुर्घटनाएँ रुकें।

15. भारत में हर साल 13.5 लाख से ज़्यादा लोग तंबाकू के सेवन के कारण मरते हैं। इस दुखद स्थिति के समाप्त होने के लिए प्रार्थना करें।

16 दस में से एक भारतीय तंबाकू से संबंधित बीमारियों के कारण असमय अपनी जान गँवा देता है; आइए, उनके परिवर्तन और उपचार के लिए प्रार्थना करें।

17 भारत तंबाकू से संबंधित बीमारियों के इलाज पर सालाना ₹1.77 लाख करोड़ से ज़्यादा खर्च करता है। आइए, इस लत के गुलाम बने लोगों के पूरी तरह से मुक्त होने के लिए प्रार्थना करें।

18 प्रार्थना करें कि सुप्रीम कोर्ट पूरे भारत में सिगरेट और बीड़ी की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगाए और केंद्र व राज्य सरकारें इसे लागू करें।

19 पिछले एक दशक में, भारत में 17 लाख से ज़्यादा लोग एचआईवी(HIV) से प्रभावित हुए हैं। आइए, उन सभी के पूर्ण उपचार और आशा के लिए प्रार्थना करें जो इससे पीड़ित हैं।

20 प्रार्थना करें कि जो लोग घातक परिणामों से अवगत होने के बावजूद जानबूझकर पाप में लिप्त हैं, वे पश्चाताप करें और एचआईवी(HIV) से ग्रस्त लोगों के साथ सम्मान और करुणा से पेश आएँ।

21 एचआईवी(HIV) से सबसे अधिक प्रभावित राज्यों के लिए प्रार्थना करें; आंध्र प्रदेश (318,814), महाराष्ट्र (284,511), कर्नाटक (212,982), तमिलनाडु (116,536), उत्तर प्रदेश (110,911), और गुजरात (87,440)। सरकार उनके स्वास्थ्य लाभ और रोकथाम के लिए ठोस कदम उठाए।

22 आइए, अपने माता-पिता की गलतियों के कारण एड्स(AIDS) से पीड़ित बच्चों के लिए प्रार्थना करें; परमेश्वर उन पर दया करें और उनके शरीर में पूर्ण उपचार का संचार करें।

23 प्रार्थना करें कि केंद्र और राज्य सरकारें पूरे देश में एचआईवी/एड्स के बारे में जागरूकता और शिक्षा फैलाने के लिए सख्त कदम उठाएँ।

24 प्रार्थना करें कि सत्य, प्रेम और एकता हर चर्च में व्याप्त हो और बच्चे और युवा अपनी आत्मा में परमेश्वर के लिए आग से परिपूर्ण हो जाएँ।

25 जैसे परमेश्वर पवित्र है, वैसे ही हर विश्वासी जो उसे जानता है, पवित्रता का जीवन जिए और पूरी लगन और तत्परता से उसकी आराधना करे।

26 परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार सभी प्राणियों पर पवित्र आत्मा के उंडेले जाने के लिए प्रार्थना करें; ताकि जो कोई उसका प्यासा है, वह उसका अभिषेक बिना किसी सीमा के प्राप्त करे।

27 पवित्र आत्मा की अग्नि प्रत्येक खोजने वालों पर बरसे, उन्हें वरदानों, फलों और सामर्थ्य से भर दे, जिससे चिन्ह और चमत्कार प्रकट हों, और इन अंतिम दिनों में कलीसियाओं में पुनः जागृति की ज्वाला प्रज्वलित हो।

28 वासना, अनैतिकता, हत्या, डकैती और व्यसन की आत्माओं के विरुद्ध प्रार्थना करें जो राष्ट्रों को नष्ट कर रही हैं और प्रार्थना करें कि सभी लोगों को मुक्ति मिले और वे स्वतंत्र हों।

29 प्रार्थना करें कि सुसमाचार हर राष्ट्र में घोषित हो; हर शहर और गाँव में कलीसियाएँ स्थापित हों, और परमेश्वर का राज्य पूरी दुनिया में स्थापित हो।

30 अंत में, आइए हम पूरे जोश के साथ प्रार्थना करें कि इन अंतिम दिनों में, आत्मा जीतने वाले सेवकों की सेनाएं उठ खड़ी हों - और परमेश्वर उद्धार की सबसे बड़ी फसल की आज्ञा दे जो इस संसार ने कभी देखी है!

रॉकेट मैन!

सभी युवा सफल लोगों को मेरा हार्दिक अभिवादन !

अक्सर, जब हमें कोई कमजोरी, विकलांगता या बीमारी होती है, तो हम उसे तब तक दोहराते रहते हैं जब तक कि हम अपने मन को यह विश्वास नहीं दिला लेते कि सफलता असंभव है। लेकिन कुछ विरले लोग ऐसे भी होते हैं जो अपनी कमजोरियों को ही जीत का आधार मानते हैं—और उनसे बहुत आगे निकल जाते हैं।

आज, आइए एक ऐसे ही सफल व्यक्ति के अविश्वसनीय जीवन पर नज़र डालते हैं।

वह लड़का जिसने हार नहीं मानी

गब्रिएल ज़िन्हो का जन्म 2002 में ब्राज़ील के सांता रीटा डो सपुकाई में हुआ था। वह फ़ोकोमेलिया नामक एक दुर्लभ जन्मजात बीमारी के साथ पैदा हुए थे। (फ़ोकोमेलिया एक दुर्लभ जन्मजात दोष है जिसमें अंग—हाथ या पैर—बहुत छोटे और शरीर से सीधे जुड़े होते हैं, जिनके बीच का हिस्सा गायब होता है।) इस वजह से, गब्रिएल बिना हाथों के पैदा हुए थे, और उनके पैर बहुत छोटे और अविकसित थे। उन्हें देखने वाले कई लोगों ने सोचा, “यह बच्चा कभी भी दूसरों की तरह सामान्य जीवन नहीं जी सकता।”

वह गरीबी और शारीरिक विकलांगता की दोहरी चुनौती का सामना करते हुए बड़ा हुआ। रोज़मर्रा के साधारण काम भी उसके लिए मुश्किल थे। फिर भी, इन सबके बावजूद, उनकी माँ ने कभी उम्मीद नहीं छोड़ी। उनका दृढ़ विश्वास था, “मेरा बेटा न केवल एक सामान्य जीवन जीएगा—वह एक असाधारण जीवन जीएगा।” इसी अटूट विश्वास के साथ, उन्होंने उसे असीम प्रोत्साहन और प्रेम से पाला।

बिना बाँहों के तैरना सीखना

हालाँकि गब्रिएल के पास बाँहें नहीं थीं, फिर भी उसने चार या पाँच साल की उम्र में तैरना सीख लिया था। तेरह साल की उम्र में, एक आश्चर्यजनक घटना घटी। उसे बताए बिना ही, उसके स्कूल के शारीरिक शिक्षा शिक्षक ने उसका नाम एक तैराकी प्रतियोगिता में दर्ज करा दिया। सभी को—स्वयं को भी—हैरानी हुई! गब्रिएल ने उस प्रतियोगिता में तीन स्वर्ण पदक जीते! यह उसकी महानता की यात्रा का पहला कदम था। उसी क्षण से, तैराकी के प्रति उसका जुनून और बढ़ता गया। हालाँकि बिना बाँहों वाले व्यक्ति के लिए तैरना असंभव लगता था, गेब्रियल ने एक अनोखा तरीका खोज निकाला—अपनी कमर और पैरों का इस्तेमाल करके डॉल्फ़िन की तरह पानी में तैरना।

एक चैंपियन की तरह प्रशिक्षण

गब्रिएल ने ब्राज़ील के सबसे प्रसिद्ध क्लबों में से एक, क्रूज़ेरो स्पोर्ट्स क्लब में प्रशिक्षण शुरू किया। वहाँ के एथलीटों और कोचों ने उन्हें अविश्वसनीय सहयोग और प्रोत्साहन दिया। उन्होंने हफ़्ते में छह दिन, हर दिन घंटों अभ्यास किया, अपने शरीर को मज़बूत बनाया और अपने कौशल को निखारा। छोटी-छोटी जीतों ने उनका आत्मविश्वास बढ़ाया, जबकि बड़े सपनों ने उन्हें आगे बढ़ाया।



स्थानीय चैंपियन से विश्व नायक तक

- 2019 में, पेरू में आयोजित पैरापैन अमेरिकी खेलों में, गब्रिएल ने ब्राज़ील के लिए स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक जीतकर अपने देश को गौरवान्वित किया।
 - फिर, 2020 टोक्यो पैरालिंपिक में, उन्होंने दो स्वर्ण पदक और एक रजत पदक जीतकर अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की।
 - 2024 पेरिस पैरालिंपिक तक, गब्रिएल अजेय थे। उन्होंने तीन स्वर्ण पदक जीते और “रॉकेट मैन” उपनाम अर्जित किया।
 - पुरुषों की S2 200 मीटर फ्रीस्टाइल में, उन्होंने 3 मिनट 58.92 सेकंड में दौड़ पूरी करके स्वर्ण पदक जीता।
 - उन्होंने 100 मीटर और 50 मीटर बैकस्ट्रोक स्पर्धाओं में भी अपना दबदबा बनाया और अपने नाम और पदक जोड़ लिए।
- आज, गब्रिएल ज़िन्हो एक विश्व-प्रसिद्ध पैरालिंपिक स्टार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। अपने एथलेटिक करियर के साथ-साथ, वह पत्रकारिता में डिग्री भी हासिल कर रहे हैं—यह साबित करते हुए कि उपलब्धि की उनकी भूख स्विमिंग पूल से कहीं आगे तक फैली हुई है। उनका अगला लक्ष्य? 2028 लॉस एंजिल्स पैरालिंपिक।

सामर्थ की सच्ची परिभाषा

प्रिय मित्रों, यह याद रखें: शारीरिक अक्षमता कोई बाधा नहीं है—दृढ़ संकल्प की कमी है। गैब्रियल उन सरलतम कार्यों को भी नहीं कर पाते थे जिन्हें हममें से अधिकांश लोग सहजता से करते हैं। लेकिन शिकायत करने के बजाय, उन्होंने साहस को चुना। आत्म-दया के बजाय, उन्होंने सामर्थ को चुना। आज, उन्हें दुनिया भर में प्रेरणा और लचीलेपन के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।

तो, एक पल के लिए गहराई से सोचें—आपकी सीमा कहाँ है? क्या यह आपके शरीर में है... या आपके मन में?

हर पांचवें रविवार को हमारे पास युवाओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम होता है - "रिवाइवल इग्नाइटर फ़ेलोशिप"। यह जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल पर 30/11/2025 और 06/03/2026 को दोपहर 3:00 बजे "लाइव" प्रसारित किया जाएगा। कृपया अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए नंबर पर हमसे संपर्क करें।



संपर्क संख्या : +919750955548



Jesus Redeems - Hindi



www.comfortertv.com

युवा जीवन

यीशु उद्धार करता है युवा तंबू के माध्यम से "युवा जीवन" नामक मासिक पत्रिका तमिल, अंग्रेज़ी, हिंदी, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़ और बांग्ला भाषाओं में प्रकाशित की जा रही है।

हर महीने प्रकाशित होने वाली युवा जीवन पत्रिका को आप प्राप्त करना चाहते हैं तो किस भाषा में चाहिए, उस भाषा के सामने टिक करके उस भाग का फोटो लेकर अपनी स्पष्ट पता विवरण के साथ हमें व्हाट्सएप करें।

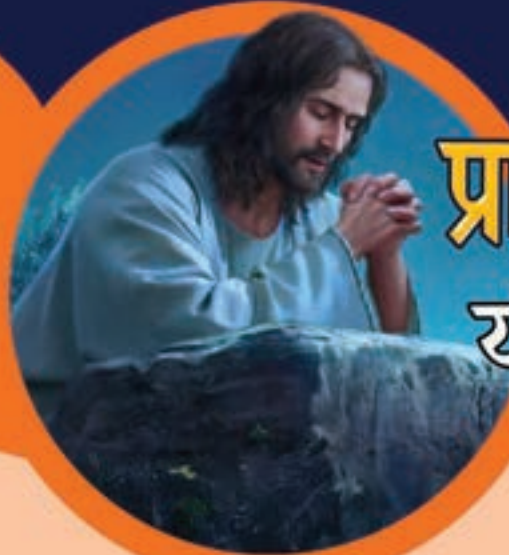


+91 9750955548



youth@jesuredeems.org





मैं एक प्रार्थना योद्धा हूँ यीशु का प्रार्थनामय जीवन

यीशु मसीह — हालाँकि वे स्वर्ग में पिता के समक्ष थे — जब वे मानव रूप में पृथ्वी पर आए, तो वे निरंतर प्रार्थना में लगे रहे। जिस प्रकार उन्होंने हर चीज़ में एक आदर्श स्थापित किया, उसी प्रकार उन्होंने हमें प्रार्थनामय जीवन के लिए एक सशक्त आदर्श भी दिया।

आइए देखें कि यीशु ने कैसे प्रार्थना की और कैसे उनका प्रार्थनामय जीवन हमारा सर्वोत्तम उदाहरण बन गया।

1. संध्या प्रार्थना

“भीड़ को विदा करने के बाद, वह प्रार्थना करने के लिए अकेले पहाड़ पर चढ़ गए। जब शाम हुई, तो वे वहाँ अकेले थे।” (मत्ती 14:23)

पूरा दिन लोगों के बीच सेवा करने के बाद भी, यीशु ने जानबूझकर एकांत के क्षण चुने — अपने पिता के साथ गहन संवाद करने के लिए। हमारे लिए अनुकरणीय आदर्श!

2. प्रातःकालीन प्रार्थना

“अगली सुबह भोर होने से पहले, यीशु उठे और प्रार्थना करने के लिए एकांत स्थान पर गए।” (मरकुस 1:35)

उन्होंने उस वचन का पालन किया जो कहता है, “जो मुझे सवेरे सवेरे ढूँढ़ते हैं, वे मुझे पाएँगे”* (नीतिवचन 8:17)। अपने दिन के शुरुआती पल पिता के साथ बिताना उनकी प्रतिदिन की आदत थी।

3. सम्पूर्ण-रात्रि प्रार्थना

“एक दिन, यीशु प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर गए,

और उन्होंने पूरी रात परमेश्वर से प्रार्थना की।”

(लूका 6:12)

अपने बारह शिष्यों को चुनने से पहले, यीशु ने पूरी रात प्रार्थना में बिताई—इससे हमें पता चलता है कि बड़े फैसले हमेशा प्रार्थना में डूबे रहने चाहिए।

4. पहाड़ पर प्रार्थना

“भीड़ को छोड़कर, वह प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर गए।” (मरकुस 6:46)

पाँच हजार लोगों को भोजन कराने का महान चमत्कार करने के बाद भी, यीशु सफलता से संतुष्ट नहीं रहे—वे



प्रार्थना करने के लिए अलग हो गए। एकांत परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को मज़बूत करता है।

5. जंगल में प्रार्थना

“परन्तु यीशु अक्सर एकांत स्थानों में जाकर प्रार्थना करते थे।” (लूका 5:16)

शैतान के प्रलोभनों का सामना करने से पहले, उन्होंने चालीस दिनों तक उपवास और प्रार्थना की। एकांत में प्रार्थना करने से आध्यात्मिक सामर्थ का संचार होता है।

6. अपने शिष्यों के साथ प्रार्थना

“एक बार, जब यीशु अकेले में प्रार्थना कर रहे थे और उनके शिष्य उनके साथ थे...” (लूका 9:18)

क्रूस पर चढ़ने से पहले, उन्होंने अपने शिष्यों के लिए प्रार्थना की—यह प्रार्थना करते हुए कि उनका विश्वास दृढ़ रहे। उन्होंने उनके लिए प्रार्थना करने के साथ-साथ उनके साथ प्रार्थना करने को भी उतना ही महत्व दिया।

7. भावपूर्ण प्रार्थना

“वेदना में व्याकुल होकर, उन्होंने और भी अधिक लगन से प्रार्थना की, और उनका पसीना मानो रक्त की बूंदों की तरह ज़मीन पर गिर रहा था” (लूका 22:44)। गतसमनी में, क्रूस की पीड़ा का सामना करते हुए भी, यीशु ने भावुक, हृदयस्पर्शी प्रार्थना के माध्यम से पिता की इच्छा के प्रति समर्पण किया।

8. निरंतर प्रार्थना

“हे मेरे पिता, यदि यह प्याला मेरे पीए बिना नहीं हट सकता, तो तेरी इच्छा पूरी हो।” उसने एक ही बात तीन बार प्रार्थना की” (मत्ती 26:42, 44)। यीशु ने एक ही बात के लिए बार-बार प्रार्थना की, और हमें सिखाया कि प्रार्थना में लगे रहना परमेश्वर की इच्छा के प्रति हमारी समर्पण भावना को दर्शाता है।

9. पूर्ण समर्पण में प्रार्थना

“वह मुँह के बल ज़मीन पर गिर पड़ा और प्रार्थना की, ‘मेरी नहीं, परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो’” (मत्ती 26:39)।

मुँह के बल गिरकर, यीशु ने पूर्ण समर्पण प्रदर्शित किया—पिता के सामने स्वयं को खाली कर दिया।

10. रोते हुए आँसुओं से भरी प्रार्थना

“पृथ्वी पर अपने जीवन के दौरान, यीशु ने ऊँची आवाज़ में पुकार और आँसुओं के साथ प्रार्थनाएँ और विनतियाँ कीं।” (इब्रानियों 5:7)

लाज़र की मृत्यु और यरूशलेम के आने वाले विनाश के लिए प्रार्थना करते हुए वह रोया—यह दर्शाता है कि उसने प्रार्थना में दूसरों को कितनी गहराई से शामिल किया।

प्रिय युवा मित्रों,

जब हम यीशु के जीवन को ध्यान से देखते हैं, तो हमें एहसास होता है कि उसकी सामर्थ का रहस्य उसका प्रार्थनामय जीवन था!

उसने भीड़ को उपदेश दिया, चमत्कार किए, और हज़ारों लोगों को भोजन कराया—फिर भी, इन सबके बीच, उसने अपने सर्वोत्तम क्षण प्रार्थना में बिताए, हर कदम पिता की इच्छा के अनुरूप रखा।

आज की पीढ़ी के लिए एक चुनौती!

- सुबह अपना फ़ोन उठाने से पहले—क्या आप पहले परमेश्वर से संपर्क करेंगे?
- बड़े फ़ैसले लेने से पहले—क्या आप रात भर प्रार्थना करने के लिए तैयार हैं?
- क्या आप अपनी चिंताओं और आँसुओं को सामर्थी प्रार्थनाओं में बदलेंगे?
- क्या आप एकांत में परमेश्वर से बात करने की आदत डालेंगे?

यीशु ने एक बार अपने शिष्यों से पूछा, “क्या तुम मेरे साथ एक घंटा भी नहीं जाग सकते थे?”* (मत्ती 26:40)। आज, वही प्रश्न आपके और मेरे लिए है।

आज से, अपने प्रार्थना जीवन को अगले स्तर पर ले जाने के लिए खुद को समर्पित कर दीजिए।

- अपने कमरे को प्रार्थना कक्ष में बदल दीजिए।
- अपने अकेलेपन के पलों को परमेश्वरीय पलों में बदल दीजिए।
- अपने आँसुओं को सामर्थी प्रार्थनाओं में बदल दीजिए।

तब, यीशु की तरह, आप भी परमेश्वर की इच्छा में दृढ़ रहेंगे—हर दिन अलौकिक सामर्थ और विजय के साथ जीएँगे!

विश्वास की उड़ान



ARK 27

एविएशन अकादमी के
संस्थापक, भाई जियानी सैमुअल
का एक प्रेरणादायक सफ़र

कोविलपट्टी के छोटे से कस्बे में जन्मे और पले-बढ़े भाई जियानी सैमुअल का एक ही सपना था—पायलट बनना। आज, अनगिनत चुनौतियों का सामना करने के बाद, वह अपनी स्वयं की पायलट अकादमी — ARK 27 एविएशन — चलाते हैं। आइए सुनते हैं उनकी प्रेरणादायक यात्रा, उन्हीं के शब्दों में।

हेलो भाई, क्या आप हमें अपने परिवार और बचपन के बारे में बता सकते हैं?

मेरा जन्म थूथुकुडी जिले के कोविलपट्टी में एक मसीही परिवार में हुआ था। मेरे पिता एक सरकारी वकील के रूप में कार्यरत थे, और मेरी माँ एक स्कूल की प्रधानाध्यापिका के रूप में सेवानिवृत्त हुईं। मेरी एक बड़ी बहन है जो डॉक्टर हैं। बचपन से ही मेरा एकमात्र लक्ष्य पायलट बनना था। जब भी कोई मुझसे पूछता था, “बड़े होकर तुम क्या बनना चाहते हो?” मेरा जवाब हमेशा एक ही होता था— “मैं एक पायलट बनना चाहता हूँ!” उस सपने ने जीवन के प्रति मेरे पूरे दृष्टिकोण को आकार दिया।

आपका छात्र जीवन कैसा था और आपकी युवावस्था में क्या महत्वपूर्ण मोड़ आया?

बचपन में, मैं नियमित रूप से चर्च जाता था और अपने माता-पिता का आज़ाकारी था। लेकिन आठवीं से दसवीं कक्षा तक, मैं शरारती हो गया—मिलों के साथ समय बिताना, घूमना-फिरना, ठ्यूशन क्लास छोड़ना और किसी भी बेफ़िक्र किशोर की तरह रहना। मेरे माता-पिता ने मेरी हर ज़रूरत पूरी की; मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं थी। मैं



अच्छी तरह पढ़ता था, लेकिन दूसरों के नक्शेकदम पर चलने के अलावा मेरे पास कोई स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं था।

फिर दसवीं कक्षा में एक बड़ा हादसा हुआ—इतना गंभीर कि मेरे चेहरे का दाहिना हिस्सा पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। मैं कई दिनों तक बिस्तर पर पड़ा रहा और स्कूल नहीं जा सका। उस स्थिति से उबरने के दौरान, मैंने पहली बार अपने भविष्य के बारे में गंभीरता से सोचना शुरू किया। मैंने सोचा, “अगर मैं अपनी परीक्षा में फेल हो गया, तो मेरे जीवन का क्या होगा?” मुझे डर ने जकड़ लिया—लेकिन इसने मुझे परमेश्वर के और करीब भी ला दिया।

मैंने नियमित रूप से बाइबल पढ़ना शुरू किया और यीशु के बारे में और जानने की इच्छा उत्पन्न की। मैं हमारे परिवार की प्रार्थनाओं में शामिल होने लगा और धीरे-धीरे एक अनुशासित जीवनशैली में लौट आया। तभी मुझे एहसास हुआ कि प्रार्थना कितनी ज़रूरी है और मसीह के करीब रहना कितना ज़रूरी है। वह अनुभव मेरे जीवन का निर्णायक मोड़ बन गया।

पायलट बनने के अपने सपने को पूरा करने के लिए आपने क्या कदम उठाए?

दसवीं कक्षा में, मैंने अपना जीवन पूरी तरह से यीशु को समर्पित कर दिया और प्रार्थना को अपनी प्रतिदिन की आदत बना लिया। जैसे-जैसे मैंने ज़्यादा प्रार्थना की, मुझे समझ आने लगा कि मुझे क्या करना चाहिए और क्या नहीं। स्कूल खत्म करने के बाद, मैंने पायलट बनने के तरीके पर शोध करना शुरू किया—लेकिन मेरा मार्गदर्शन करने वाला कोई नहीं था। मेरे परिवार या मित्रों में से किसी का भी विमानन से कोई लेना-देना नहीं था।

इसलिए, मैंने पहले इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग (EEE) में डिप्लोमा किया। फिर मैंने अपने पिता को विमानन में आगे बढ़ने की अपनी इच्छा के बारे में बताया। उन्होंने हर जगह पूछताछ शुरू की और आखिरकार चेन्नई में एक संस्थान ढूँढ़ निकाला। मैंने

फ्लाइट डिस्पैच कोर्स में दाखिला लिया, लेकिन बाद में पता चला कि पायलट बनने के लिए यह ज़रूरी नहीं था। यह बहुत बड़ी निराशा थी—लेकिन मैंने हार नहीं मानी।

मैं लगातार प्रार्थना करता रहा, पहले से कहीं ज़्यादा जोश से यीशु की तलाश करता रहा। और परमेश्वर ने अगला दरवाज़ा खोल दिया—एक पायलट प्रशिक्षण अकादमी में शामिल होने का अवसर। वहाँ भी, मुझे कई चुनौतियों और असफलताओं का सामना करना पड़ा। मेरे सफ़र का हर पड़ाव संघर्षों से भरा था, लेकिन मैं बिना रुके आगे बढ़ता रहा।

आपने हार नहीं मानी! क्या प्रशिक्षण आपके लक्ष्य तक पहुँचने के लिए पर्याप्त था?

जैसे-जैसे मैं यीशु के करीब आता गया, मैं प्रार्थना में दृढ़ होता गया—उनसे लगातार प्रार्थना करता रहा कि वे मुझे पायलट बनाएँ। परमेश्वर मुझे दिखाने लगे कि मुझे क्या कदम उठाने हैं और किनसे बचना है। उनके मार्गदर्शन का पालन करते हुए, मैं पढ़ाई के लिए न्यूज़ीलैंड चला गया। वहाँ जीवन आसान नहीं था; मुझे विदेश में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

अपनी पढ़ाई के बीच में, मुझे एक चौंकाने वाली खबर मिली—मेरे पिताजी गंभीर रूप से बीमार पड़ गए थे। मैं दुविधा में था। क्या मुझे अपनी पढ़ाई जारी रखनी चाहिए या घर लौट जाना चाहिए? अगर मैं वापस जाता, तो मेरा सपना टूट जाता। भारी मन से, मैंने सच्चे मन से प्रार्थना की। मैंने न्यूज़ीलैंड में अपने चर्च के मित्रों से भी मेरे पिताजी के लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया। धीरे-धीरे, वे ठीक होने लगे! इससे मेरा विश्वास और भी मज़बूत हुआ, और मैंने पूरी तरह से प्रार्थना पर निर्भर रहना सीख लिया।



निरंतर प्रार्थना और विश्वास के माध्यम से, परमेश्वर अद्भुत कार्य करने लगे। मैंने अपनी पढ़ाई सफलतापूर्वक पूरी की और 2019 में भारत लौट आया।

इतने संघर्षों के बाद, आप आखिरकार भारत लौट आए। क्या आपको तुरंत नौकरी मिल गई?

(मुस्कराते हुए) नहीं, बिल्कुल नहीं! मैंने पक्का फैसला कर लिया था—मैं सिर्फ पायलट बनकर ही काम करूँगा। मैंने लगातार प्रार्थना की, लेकिन महीनों बीत गए, कोई जवाब नहीं मिला। वे महीने मुश्किलों से भरे थे। फिर, एक और लासदी हुई—अगस्त 2019 में मेरे पिता का निधन हो गया। मैं पूरी तरह टूट गया। मेरी बहन अभी अविवाहित थी, और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करूँ। हालाँकि मैंने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली थी, मैं बेरोज़गार और उलझन में था। इकलौता बेटा होने के नाते, मुझे परिवार की ज़िम्मेदारी उठानी थी और हमें आगे बढ़ाना था। निरंतर प्रार्थना के माध्यम से, परमेश्वर ने 2022 में मेरी बहन की शादी सफलतापूर्वक आयोजित करने में मेरी मदद की। यह पूरी तरह से परमेश्वर की कृपा थी—यह सिर्फ प्रार्थना के कारण ही संभव हुआ!

उसके बाद आपके करियर और आपके लक्ष्य ने कैसे आकार लिया?

उस दौरान, मैं नलुमावाड़ी गया, जहाँ मेरी मुलाकात मोहन अंकल और पन्निर सेल्वम अंकल से हुई। उनसे बात करते हुए, उन्होंने मुझे सलाह दी, “पढ़ाई खत्म करने के बाद यँ ही खाली नहीं बैठना चाहिए।

परमेश्वर जो भी मौका दे, उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। आगे बढ़ते रहना चाहिए।” उनके शब्दों ने मुझे सचमुच प्रभावित किया। इसके बारे में प्रार्थना करने के बाद, मेरे हृदय को शांति मिली। परमेश्वर के मार्गदर्शन में, मैंने चेन्नई के एक एविएशन कॉलेज में दो साल तक प्रशासनिक अधिकारी और सहायक प्रोफेसर के रूप में काम करना शुरू किया। काम शुरू करने से पहले, मैंने कई परियोजनाओं की योजना बना ली थी। जब मैंने उनमें से एक को कुछ कंपनियों के सामने प्रस्तुत किया, तो कुछ लोगों के एक समूह ने मेरे साथ मिलकर एक नया व्यवसाय शुरू करने का प्रस्ताव रखा। इस तरह ARK 27 एविएशन अकादमी का जन्म हुआ—‘ARK’ का अर्थ है नूह का जहाज।

ये तो अद्भुत है! तो, ARK 27 एविएशन अकादमी आखिर है क्या, और अब यह कैसा प्रदर्शन कर रही है?

ARK 27 एविएशन अकादमी एक पायलट प्रशिक्षण अकादमी है जिसे महत्वाकांक्षी पायलटों की मदद के लिए डिज़ाइन किया गया है। जब मैं पढ़ाई कर रहा था, तो मेरा कोई मार्गदर्शक नहीं

था, और मुझे अनगिनत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मेरा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि अगली पीढ़ी को मेरे जैसे संघर्षों का सामना न करना पड़े।

आज, अकादमी छात्रों को एविएशन में अपने सपनों को पूरा करने में मदद करती है। परमेश्वर, जिन्होंने कभी मुझे पायलट बनने के सपने के पीछे ज़िद करते हुए पाया था, अब मुझे उस मुकाम पर पहुँचाया है जहाँ मैं एक ऐसी टीम के साथ काम करता हूँ जिनमें हवाई जहाज़ों के मालिक तक हैं! यह पूरी तरह से प्रभु की कृपा है।

अंत में, आप आज के युवाओं को क्या कहना चाहेंगे?

प्रिय युवाओं, जब भी कोई निर्णय लें, तो परमेश्वर को सर्वप्रथम रखें। जब आप ऐसा करेंगे, तो वे आपके जीवन में चमत्कार करेंगे। कभी भी आलसी न हों और आसानी से हार न मानें। जब असफलता आए, तो वहीं रुकें नहीं—दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें।

जब आप कड़ी मेहनत करते रहेंगे और उनके हाथों में विनम्र बने रहेंगे, तो परमेश्वर आपको ज़रूर ऊपर उठाएँगे। प्रभु का भय ज्ञान की शुरुआत है—और यही वह वचन है जिस पर मैं आज भी विश्वास करता हूँ। जब आप परमेश्वर को सर्वप्रथम स्थान देंगे, तो वे आपकी पढ़ाई, आपके करियर और आपके जीवन के हर क्षेत्र में आपको ऊँचा उठाएँगे।



विश्व जागृति प्रार्थना भवन

Our Branches

Mumbai (Dharavi)

World Revival Prayer Center, T/1, Block No.11,
90 Feet Road, Rajiv Gandhi Nagar Dharavi, Mumbai - 400 017
Email: br.dharavi@jesusredeems.org, Ph: +91 8082410410

Mumbai (Malad)

World Revival Prayer Center, Bethel Plot 305/E,
Mith Chowky Marve Road, Malad(w) Mumbai - 400064
Ph: +91 9664050567

Ranchi

World Revival Prayer Centre, Kadru Sarna Toli,
Near Argora Railway Station, Road no -1, Doranda P.O
Ranchi - 834 002, Jharkand,
Email: br.ranchi@jesusredeems.org, Ph: 9523336010

Chandigarh

World Revival Prayer Centre, SCO 1st Floor, Dhakoli-Kalka Road,
NH-22, Near City Court Zirakpur, Punjab- 160104
Email: br.chandigarh@jesusredeems.org, Ph: 9417726492

Delhi

World Revival Prayer Centre, Plot no 152, Ground floor,
Pratap nagar opposite harinagar bus depot, New Delhi - 110064
Email: br.delhi@jesusredeems.org, Ph: 011-25616253 / 35580428

Come and Pray



समाचार!

भारत में

1990 के बाद से कैंसर के मामलों में 26% की वृद्धि हुई है

मेडिकल जर्नल द लैंसेट में प्रकाशित एक

अध्ययन के अनुसार, 1990 के बाद से भारत में कैंसर के मामलों की दर में 26% की वृद्धि हुई है। निष्कर्ष बताते हैं कि पिछले 33 वर्षों में भारत में कैंसर के मामलों में वृद्धि हुई है।

1990 में, कैंसर के मामलों की संख्या प्रति 100,000 लोगों पर 84.8 थी, जबकि 2023 में यह बढ़कर प्रति 100,000 लोगों पर 107.2 हो गई है। इसी प्रकार, इस अवधि के दौरान कैंसर से होने वाली मौतों में भी 21% की वृद्धि हुई है।

इसके विपरीत, संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन दोनों में समान 33 वर्षों की अवधि में कैंसर की घटनाओं और मृत्यु दर में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई है।

इस पर टिप्पणी करते हुए, नई दिल्ली स्थित एम्स के कैंसर विशेषज्ञ डॉ. अभिषेक शर्मा ने कहा:

“अमेरिका और चीन में कैंसर के मामलों और मौतों में कमी का मुख्य कारण उनके मजबूत तंबाकू नियंत्रण कानून, सार्वभौमिक टीकाकरण और सुव्यवस्थित कैंसर स्क्रीनिंग कार्यक्रम हैं।”

उन्होंने आगे बताया कि भारत में तंबाकू का अधिक सेवन, मोटापा और संक्रामक रोगों सहित कई जोखिम कारक हैं, जबकि कैंसर का शीघ्र पता लगाना अभी भी काफी कम है।

उन्होंने जोर देकर कहा, “इसलिए, भारत को कैंसर की रोकथाम और नियंत्रण के लिए अपनी रणनीतियों को तत्काल मजबूत करना चाहिए।” — 30 सितंबर, हिंदु तमिल थिसाई



TCS नौकरी से निकाले गए कर्मचारियों को दो साल तक का वेतन देगी

टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (TCS) में वर्तमान में लगभग 6,13,000 लोग कार्यरत हैं। हाल ही में, कंपनी ने घोषणा की है कि 2026 तक, वह अपने कर्मचारियों की संख्या में 2% की कमी करने की योजना बना रही है, जो लगभग 12,000 कर्मचारियों के बराबर है।

रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि छंटनी से प्रभावित कर्मचारियों को पहले से सूचना दी जाएगी और उनकी सेवा के वर्षों के आधार पर, उन्हें छह महीने से लेकर दो साल के वेतन तक का मुआवज़ा दिया जाएगा।

जो कर्मचारी आठ महीने से ज़्यादा समय से किसी प्रोजेक्ट के बिना हैं, उन्हें कम मुआवज़ा मिलेगा, जबकि 10 से 15 साल की सेवा वाले कर्मचारियों को 18 महीने का वेतन मिलेगा। जिन कर्मचारियों ने 15 साल से ज़्यादा समय तक काम किया है, उन्हें मुआवज़े के तौर पर 24 महीने तक का वेतन मिल सकता है।

इसके अलावा, टीसीएस ने घोषणा की है कि यह छंटनी से निकाले गए कर्मचारियों को नई नौकरी के अवसर खोजने में मदद करेगी। सेवानिवृत्ति की आयु के करीब पहुँच रहे कर्मचारियों के लिए, कंपनी एक सहज बदलाव सुनिश्चित करने के लिए स्वीच्छिक सेवानिवृत्ति योजना (वीआरएस) की सुविधा प्रदान करेगी। — 3 अक्टूबर, हिंदु तमिल थिसाई



युवा जागरण सभा

प्रभु की स्तुति हो ! अत्यंत हर्ष के साथ हम साझा करते हैं कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने अक्टूबर 2025 में महाराष्ट्र में आयोजित युवा जागरण सभा के दौरान अपनी अभिषेक की वर्षा युवाओं पर उड़ेली। इस धन्य सभा में कुल 1,102 युवा सम्मिलित हुए, और परमेश्वर ने हमारे प्रिय भाई अविनाश का सामर्थ्यपूर्वक उपयोग किया ताकि वे उनके बीच जागरण की आग प्रज्वलित करें। समस्त महिमा और आदर केवल परमेश्वर को ही प्राप्त हो !

